अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वविज्ञ (वर्ष : 2025) दिनांक : 14.08.2025

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (खण्ड-3)–70

प्र. 1 कोई छः पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) नामकर्म के उदय से जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त होता है।

(ख) गुरुलघु और अगुरुलघु सब पर्यायों को जानने वाला।

(ग) अनाज बोने के लिए जलाशयों से नाली खोदकर पानी निकालना।

(घ) शरीर में होने वाला अशुभ द्रव्य।

(ड़) माया, निदान और मिथ्यादर्शन शल्य का कर्तन करने वाला।

(च) चक्र-अस्त्र को हाथ में रखने वाला।

(छ) आचार की विराधना करने वाला।

(ज) ऋण धारण करने वालों को ऋण मुक्त करना।

प्र. 2 कोई छः प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 6

(क) त्रि-अज्ञानी किसे कहते हैं तथा उसमें कितने अज्ञान होते हैं?

(ख) अनुत्तरोपपातिक जीव का सर्वबंध और देशबंध का अंतरकाल लिखें।

(ग) क्षेत्र की अपेक्षा से अनंत का क्या तात्पर्य है?

(घ) साध्यसिद्धि के लिए क्या आवश्यक है?

(ड़) संयम के दो अर्थ लिखें।

(च) जमालि ने कितने अंगों का अध्ययन किया था?

(छ) देवनिकायों में त्रायस्त्रिंश का कौन सा प्रकार है और ये किसके समान हैं?

(ज) उत्पल पत्र की आगति का क्या नियम है?

प्र. 3 कोई दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए– 30

(क) जीवच्छरीर तथा जीव मुक्त शरीर के मौलिक पांच रूप कौन से हैं?

(ख) लब्धि की दृष्टि से किये गये ज्ञान के विकल्पों को लिखें।

(ग) सामायिक प्रत्याख्यान की तीन कोटियां लिखें।

(घ) औदारिक शरीर बंध के तीन हेतु क्या हैं?

(ड़) वायुकाय का सर्वबंध का जघन्य अंतर काल अपेक्षा भेद से लिखें।

(च) प्रवेशन का अर्थ व उसके प्रकार लिखें।

(छ) एक जीव के प्रदेश लोकाकाश परिमाण तुल्य किस अपेक्षा से है?

(ज) पांच प्रकार के अभिगम कौन से हैं?

(झ) किल्विषिक देव किन कर्मादान-कर्मबंध के हेतुओं के कारण किल्विषिक देव के रूप में उत्पन्न होते हैं?

(ञ) प्रज्ञापनी भाषा किसे कहते हैं? यह किसका भेद है?

(ट) किसलय का स्वरूप क्या है?

(ठ) दिशा चक्रवालतप की व्याख्या करें।

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– 15

(क) क्षपक श्रेणी आरोहण की प्रक्रिया लिखें।

(ख) शरीर के स्वरूप व कार्य का वर्णन करें।

(ग) आलीकरण बंध किसे कहते हैं? उसके प्रकारों का वर्णन करें।

(घ) गति-प्रवाद के प्रकार लिखें।

(ड़) परिणमन की वैज्ञानिक अवधारणा क्या है?

प्र. 5 ज्ञेय के चार प्रकारों के आधार पर प्रथम तीन ज्ञान का वर्णन करें। 13

अथवा

पांच व्यवहार का विवेचन करें।

झीणी चरचा–30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दीजिए– 10

(क) संसार परीत की जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति लिखें।

(ख) द्वीन्द्रिय जीव में दो ज्ञान अथवा दो अज्ञान किस अपेक्षा से होते हैं?

(ग) लवण समुन्द्र मध्य भाग से कितने योजन चौड़ा, ऊँचा तथा गहरा है?

(घ) आभोग आहार किसे कहते हैं? यह किसके द्वारा लिया जाता है?

(ड़) प्रथम छः नय के विषय लिखें।

(च) भगवती सूत्र के अनुसार श्रावण में वर्षा ऋतु का प्रारम्भ कब होता है?

(छ) अन्तिम तीन लेश्याएं मोक्ष की साधक और बाधक किस कारण है?

(ज) देव का जन्म (प्रजनन) क्यों नहीं दिखाई देता?

(झ) केवली आहार को मोक्ष का बाधक क्यों कहा है?

(ञ) नंदी सूत्र के अनुसार तीर्थ किसके आधार पर टिकेगा?

(ट) तीसरे महाव्रत के कुल कितने भंग होते हैं और किस प्रकार?

(ठ) आठ योग किसमें व कौन से पाये जाते हैं?

प्र. 7 कोठे तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) बिचे चोड़ो दश सहस्त्र जोजन नो, त्यां सहस्त्र ऊंडो ऊंचो सोलै हजार।
पचांणु सहंस जोजन धातकी इमज, इम बे लख जोयण लवणोदधि धार।।

(ख) सात पल्य नीं परिग्रही, सुधर्म सुर नै भोग।
नव पल नीं ईसान नां, मानै सुख संभोग।।

(ग) बले मरै तिका कारण कहूं, नहीं निकलवा माग।
त्रीरत्न चक्री भोगवै, वृद्ध वय रो नहिं थाग।।

(घ) तेवीसमां सूं गुणतीसमां लग, इणविध सातूं विचार।
ए गुणतीस अंक सन्नी मनुष्य नां, तिण में नव लख पिण अवधार रे।।

प्र. 8 ज्योतिश्चक्र और उर्ध्वलोक का वर्णन करें। 8

अथवा

ढाल 5 उपयोग का सारांश लिखें।